International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 64-65

परिवार में राजनीतिक विषयों की समीक्षा तथा इनपर परामर्श (वाराणसी जनपद के संदर्भ में)

डॉ0 ताबिन्दा सुल्ताना
सहा. अचार्य, राजनीति शास्त्र विभाग, मौलाना आजाद इन्स्टीटयूट आफ हयूमनिटीज सांइस एण्ड टेक्नालॉजी, महमूदाबाद, सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
लगभग 50 वर्ष पूर्व साधारण परिवारों में राजनीति की इतनी चर्चा नहीं होती थी, जितनी कि आज हो रही है। जिसका मुख्य कारण यह है कि पारिवारिक जीवन में अनेक क्षेत्र राजनीतिक निर्णयों से प्रभावित हो रहे हैं, जैसे आवश्यक वस्तुओं की मंहगाई, अनावश्यक सरकारी व्यय के कारण राज्य के पास पैसे की कमी जनजीवन में भ्रष्टाचार के कारण अनेक सुविधाओं (जैसे सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों से सामग्री इत्यादि) का साधारण परिवारों को उपलब्ध न हो पाना बार–बार चुनाव का होना, जिसके कारण मंहगाई बढ़ती है, राजनीतिज्ञों का कालाबाजारी, आवश्यक वस्तुओं में मिलावट तथा कम तोलना इत्यादि आर्थिक अपराधों में संलग्न तथा समाज विरोधी तत्वों को सुरक्षा प्रदान करना और उनके बदले में पार्टी कोष के लिये उनसे पैसा लेना इत्यादि ऐसी समस्याएँ है। इन समस्याओं के संदर्भ में भी राजनीतिक विषयों पर आपस में विचार विमर्श होने लगा है। इतना ही नहीं, आज मध्यम वर्गीय परिवार भी वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों की समीक्षा करने लगे हैं।

मूल शब्द : पारिवारिक जीवन, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, राजनीतिज्ञों।

प्रस्तावना
परिवार समाज की बुनियादी इकाई है, George Peter Murdock ने ''परिवार को एक सार्वजनिक संस्था माना है और इसकी संरचना तथा प्रकार्यो पर विस्तृत प्रकाश डाला है। सबसे छोटी पारिवारिक इकाई को Murdock ने एकाकी परिवार की संज्ञा दी है।''[1] परिवार के विषय में दो परस्पर विरोधी मत मिलते हैं, इनमें से एक प्रकार्यवादी मत है, जिसके समर्थक George Peter Murdock तथा Talcott Parsons है। इन दोनों ही विद्वानों ने परिवार के सार्वभौमिक प्रकार्यो को दर्शाया है। मुरडोक महोदय ने परिवार की बहुपक्षीय उपयोगिता की समीक्षा की है। इस समीक्षा में Murdock महोदय ने दर्शाया है कि, परिवार नई संतान के सामाजीकरण जिसमें राजनीतिक समाजीकरण भी शामिल है में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसी प्रकार Talcott Parsons ने परिवार के प्रकार्यो का विस्तृत विश्लेषण किया है। Parsons महोदय ने बताया है कि परिवार ऐसे कारखाने (Factories) है जिसमें व्यक्तित्व ढ़लता है तथा बनता है। Parsons महोदय ने बताया है कि, परिवार अपने सदस्यों को स्नेह, सुरक्षा समाज की अनेक प्रथाओं, संस्थाओं और रीति रिवाजों की जानकारी तथा पारस्परिक सहयोग प्रदान करके उनके व्यक्तित्व की रचना करता है। इतना ही नहीं, व्यक्तित्व को स्थायित्व भी प्रदान करता है। Parsons ने दर्शाया है कि ''परिवार अपने सदस्यों को अनेक प्रकार की स्वाधीनताओं तथा नियंत्रणों के माध्यम से अच्छा नागरिक बनाने में सक्रिय भूमिका निभाता है।''[2]
परिवार के विषय में समालोचनात्मक परिप्रेक्ष्य Karl Marx, Edmund Leach R.D. Laing, David Carper इत्यादि ने प्रस्तुत किया है, परन्तु इस समालोचनात्मक परिप्रेक्ष्य से व्यक्तित्व के लिए परिवार के लिए परिवार के महत्व में कोई अन्तर नहीं होता है। परिवार व्यक्तित्व के राजनीतिक समाजीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक समय में संचार क्रान्ति ने जन संचार की जो सुविधाएँ उपलब्ध कराई है, उन्होंने समाज से संबंधित हर विषय की जानकारी को हर एक घर के द्वार तक पहुँचा दिया है, इनमें राजनीतिक जानकारी भी शामिल है। वर्तमान समय में राज्य की भूमिका अत्यधिक विस्तृत हो गयी है, जिसके कारण इसको सर्वव्यापी राज्य की संज्ञा दी है। उनके उत्तरदायित्व और कार्य पहले व्यक्ति के व्यक्तिगत क्षेत्र में थे, इससे निकलकर राजकीय क्षेत्र में चले गये हैं। जैसे – शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा इत्यादि इसलिये राजनीतिक जानकारी और चेतना प्राप्त करना तथा रखना अब केवल विशेषज्ञों का काम ही नहीं रह गया है, अब जनमानस भी अपने अधिकारों को लेकर सचेत है। इसको (Karl Manhiem) ने जनतांत्रिकरण की प्रक्रिया कहा है और इस तत्व की ओर संकेत किया है कि इस प्रक्रिया ने समाज के पिछड़े हुए तथा निम्न वर्गों में भी एक नई राजनीतिक चेतना का उदय किया है। इस जागरूकता के कारण वछित वर्गों में राजनीतिक एवं सामाजिक सहभागिता निरंतर बढ़ रही है।

उत्तर दाताओं के परिवार में राजनीतिक विषयों की समीक्षा एवं परामर्शः–
साधारण परिवार में महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दों की जानकारी नई संतान के राजनीतिक समाजीकरण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह सर्वविदित है कि, जब तक परिवारों में महत्वपूर्ण राजनीतिक विचारों की जानकारी उत्पन्न नहीं होती है, उस समय तक न तो व इन पर पारस्परिक चर्चा और परामर्श कर सकते है और न ही उनका मतदान व्यवहार अर्थपूर्ण और सार्थक हो सकता है। किसी भी देश में जनतंत्र की सफलता के लिए इस बात की आवश्यकता होती है कि, उस देश के साधारण परिवार तथा इनके सदस्य समकालीन राजनैतिक मुद्दों और समस्याओं से भली भाँति अवगत हो। आम नागरिक राजनेताओं तथा उनकी गतिविधियों के विषय में उनका मस्तिष्क बिल्कुल साफ हो, वे उच्चतर राजनीतिक स्तर पर व्यापक भ्रष्टाचार की समस्या का पर्याप्त ज्ञान रखते हो और इस तत्व की सराहना करते हों कि जनजीवन में व्याप्त व्यापक भ्रष्टाचार जन साधारण के सामान्य जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। राजनीतिक अभिजनों के भ्रष्ट रवैये के फलस्वरूप मंहगाई, चोरबाजारी, मिलावट, नफाखोरी इत्यादि आर्थिक अपराध उत्पन्न

होती हैं, जिनसे साधारण परिवारों का जीवन प्रतिकूल तथा प्रभावित होता है और अनेक प्रकार की आर्थिक समस्याएँ परिवार के संगठन और संतुलन को नष्ट करके सदस्यों के लिए तनाव और खिंचाव की मानसिक और भावनात्मक स्थित उत्पन्न कर देती है। इन विषयों पर पारस्परिक चर्चा तथा इनकी समीक्षा से नई संतान के राजनीतिक समाजीकरा में योग मिलता है।

राष्ट्रीय राजनीतिक विषय में अतिरिक्त संचार साधनों के माध्यम से साधारण भारतीय परिवार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक मुद्दों से भी अवगत होते जा रहे हैं और उनकी राजनीतक सूचना तथा चेतना में अभिवृद्धि के कारण साधारण परिवारों में भी नई संतान के राजनीतिक समाजीकरण की अनुकूल परिस्थितियाँ बनी हैं और बनती जा रही हैं। इस तथ्य की पुष्टि इस विषय से संबंधित आकड़ों के माध्यम से भी होती है, जिनको तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1: उत्तर दाताओं के पविार में राजनीतिक विषयों की समक्षा तथा इन पर परामर्श

क्र० सं०	उत्तर	उत्तर दाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	होता है (यदि हाँ तो)	(233)	77.67
	क. नियमित	116	38.67
	ख. बहुधा	88	29.33
	ग. कभी–कभी	29	9.67
2	नहीं होता है	67	22.33
	योग	300	100

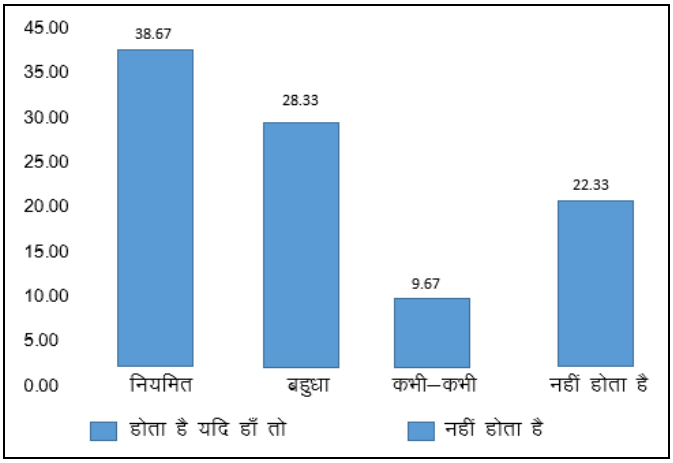

आकृति 1

तालिका से स्पष्ट है कि, अध्ययन की सूचनादाता परिवारों की बहुसंख्या 77.67% में राजनीतिक विषयों की समीक्षा तथा इन पर परामर्श होता है। इनमें से 38.67% परिवारो में नियमित रूप से 29. 33% परिवारों में बहुधा तथा 9.67% परिवारों में कभी–कभी राजनीतिक विषयों की समीक्षा तथा इन पर परामर्श होता है। इससे यह अन्वेषण उत्पन्न होता है कि, अधिकांश उत्तरदाताओं के परिवारों मे राजनीतिक जागरूकता एवं चेतना पाई जाती है। यह चेतना नई संतान के राजनीतिक समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार का पर्यावरण सामाजिक मान्यताओं के साथ–साथ राजनीतिक मान्यताओं को भी महत्वपूर्ण स्थान दे रहा है और यह युवतियों के राजनीतिक समाजीकरण एवं सहभागिता के लिए एक अच्छा ही संकेत है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि साधारण परिवारों में वर्तमान समय में देश में विद्यमान राजनीतिक विषयों में जागरूकता एवं चेतना उत्पन्न हुई है। यह परिवारों में सामाजिक मान्यताओं के साथ – साथ राजनीतिक मान्यताओं को भी महत्वपूर्ण स्थान दे रहे हैं। यह राजनीतिक सहभागिता एक समाजीकरण के लिए आशा की किरण है।

संदर्भ

1. Murdock GJ. Social Structure Macmillan, New York, 1949, p295
2. Karl Manheim, Man & Society in an age of reconstruction & Kegan Paul Ltd., London, 1954, p119.
3. Karl Pappor, Open Society and its Enemies, Routledge & Kegan Paul Ltd., London, 1957, 1(11).
4. Hannah Arendt, the Human Condition, the University of Chicago Press, 1958, p43.
5. Zevendic Barpur, Democracy & Dictatorship